शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 1 | अंक 7 | उदयपुर शुक्रवार 15 अप्रेल 2016 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

राजस्थान में जैन विरासत

-डॉ. विमलचंद्र जैन

मैं जिस धर्म की प्रतिष्ठा देखना चाहता हूं वह आज के भेदात्मक जगत में अभेदात्मक स्वरूप की कल्पना है। धर्म को मैं निर्विशेषण देखना चाहता हूं। आज तक उसके पीछे जितने भी विशेषण लगे उन्होंने मनुष्य को बांटने का ही प्रयत्न किया इसलिए आज एक विशेषण रहित धर्म की आवश्यकता है जो मानव-मानव को आपस में जोड़ सके। -आचार्य तुलसी

ढाई हजार वर्ष पहले तक एक घोष सुनाई देता था- एक्का मणुस्स जाई अर्थात् मनुष्य जाति एक है किंतु मुझे लगता है कि इधर एक हजार वर्ष में यह घोष इतना मंद पड़ गया और मानव-मानव के बीच में इतनी खाइयां बन चुकी हैं कि अगर धर्म होता तो ऐसा नहीं होता। धर्म का प्रारंभ होता है करुणा से, अनुकंपा से, मैत्री से, प्रेम और दया से।

लोगों ने धर्म को इस प्रकार स्वीकार कर लिया कि हमारी बुराइयां चलती रहें और इससे हमारे स्वर्ग का तख्ता भी बराबर आबाद रहे। उसमें भी कोई कमी न आए। स्वर्ग की सीढ़ी बराबर कायम रहे। धर्म भी चलता रहे और जितना स्वार्थ-सधता है वह भी बराबर कायम रहे। इन दोनों बातों को ऐसा कर दिया कि जैसे सियार ने सिंह की खाल को ओढ़ लिया हो। आज की दुनियां के बहुत सारे धार्मिक सिंह की खाल ओढ़े हुए सियार की भांति अपना जीवन चला रहे हैं इसलिए आचार्य तुलसी ने बहुत बार कहा कि आज सब क्रांतियों से पहले धर्म-क्रांति की जरूरत है। -आचार्य महाप्रज्ञ

राजस्थान की सांस्कृतिक धारा में जैनधर्म एक महत्वपूर्ण क्रियाशील धार्मिक शक्ति रहा है। उदारमना राजपूत शासकों ने शैव व वैष्णव धर्मी होते हुए भी कर्तव्यनिष्ठ जैन राजनयिकों, सद्गुणी एवं विद्वान जैनाचार्यों, श्रेष्ठियों एवं लोकमानस में जैनमत की लोकप्रियता से प्रभावित होकर जैन विरासत के प्रतिमानों के संरक्षण, संवर्धन एवं उत्कर्ष में गहन अभिरूचि प्रदर्शित कर प्रशंसनीय योगदान दिया है। मुगलकाल के अंत और अंग्रेजों के आगमन तक, राजस्थान में जैन विरासत की स्थूल लब्धियां, यहां के वैभव संपन्न सांस्कृतिक इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ ही नहीं अपितु भारतीय संस्कृति के इंद्रधनुषी स्वरूप की मनोरम आभा भी रही हैं।

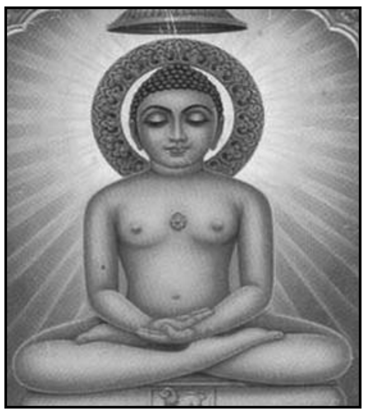

शासक वर्ग तथा श्रेष्ठी श्रावक वर्ग के अनुकूल सामंजस्य के कारण यहां जैन विरासत में निरंतर वृद्धि हुई। इस युति के फलस्वरूप मंदिर निर्माण, मूर्तिकला, चित्रकला, स्थापत्य के प्रतिमान तथा साहित्य सृजन के क्षेत्र में अपार प्रगति हुई। राज्य के विभिन्न मंदिरों व उपाश्रयों में स्थित ज्ञात व अज्ञात ग्रंथ भंडारों की प्रचुर साहित्य संपदा शोध के नानाविध आयाम प्रस्तुत करती है। बड़ी संख्या में ताड़पत्रीय ग्रंथ, हस्तलिखित ग्रंथ तथा प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत, राजस्थानी व हिंदी आदि भाषाओं में रचित जैन व जैनेतर ग्रंथ तत्कालीन समाज के विभिन्न पहलुओं को अमूल्य धरोहर के रूप में सहेजे हुए हैं।

धार्मिक आस्था, विश्वास, श्रद्धा, प्रेरणा व भौगोलिक संसाधनों की सुविधाओं की अनुकूलता के अनुरूप विरासत जन्म लेती है। कालक्रम के साथ उसके आयामों में विविधता आने लगती है और इतिहास, भूगोल, कला, संस्कृति, भाषा, मूर्ति विज्ञान, प्रस्तर विज्ञान, धातुविज्ञान, अभिलेख, लिपिशास्त्र आदि अनेक नवीन क्षितिज खुलते जाते हैं। अर्बुदमंडल में महावीर भगवान की विचरण स्थली होने के विश्वास ने गुजरात व राजस्थान के इस भौगोलिक मिलन स्थल को जैनधर्म का नोडल प्रसरण केंद्र बना दिया। इसी केंद्र से जैनधर्म 8वीं शताब्दी के पश्चात् से (उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर) राजस्थान में प्रसरित हुआ। राजस्थान में जैन विरासत भौगोलिक शक्तियों, प्रक्रम संत, शासक, श्रेष्ठी, श्रावक एवं अवस्था अस्तित्व, विध्वंस, विकास, सुरक्षा का परिणाम है। यहां जैन धर्म पर्यावरण से मित्रवत है। जैन धर्म भौगोलिक पर्यावरण का सांस्कृतिक आवास है।

भौगोलिक तथ्यों की समेकित अभिव्यक्ति के रूप में चार भौगोलिक प्रदेशों मरू, मेरू, माल व मैदान आधारभूत है। यहां की भौगोलिकता को अभिव्यक्त करने वाले मरू, मेरू, माल व मैदान शब्द अपने गूढ़ार्थ में संपूर्ण प्राकृतिक परिवेश के ही निरूपण हैं। मरू अर्थात् थार का मरूस्थल, मेरू अर्थात् अरावली पर्वत क्षेत्र, माल अर्थात् दक्षिणी पूर्व हाड़ौती का पठारी भाग तथा मैदान के अंतर्गत उत्तरी भारत के विशाल मैदान के अंश के रूप में बनास, चंबल, यमुना का मैदान हैं। यहां की महाद्वीपीय विषम जलवायु अल्पवर्षा, शुष्कता व उष्णता प्रधान है। क्षेत्रीय वैविध्य इसकी प्रमुख विशेषता है।

राजस्थान के भौगोलिक रंगमंच के ऊ पर निर्मित जैन विरासत तीन प्रकार के संसाधनों का परिणाम है। प्रथम में जैन विरासत के आधारभूत सर्जक मानव संसाधन है। द्वितीय में जैन विरासत के प्रेरक संसाधन के रूप में जैन धर्म-दर्शन-संस्कृति के स्रोत जैन आगमशास्त्र एवं व उनका सैद्धांतिक तथा व्यवहारिक स्वरूप है जो श्रमणाचार व श्रावकाचार के रूप में अभिव्यक्ति पाता है। तृतीय में जैन विरासत हेतु निमित्त संसाधन हैं जिसमें भावनिमित्त के रूप में जैनाचार्य या श्रमण वर्ग, संरक्षण निमित्त के रूप में सद्भावी राजपूत शासक एवं वित्तीय निमित्त के रूप में श्रेष्ठी एवं श्रावक वर्ग हैं।

कालक्रम में विभिन्न शताब्दियों में इनमें भेद, उपभेद (विविध गण, गच्छ, संघ) विग्रह, विखंडन नवीन पंथोदय आदि होने पर भी यह टूटन विरासत के लिये अनुकूल ही सिद्ध हुई है। श्रावक वर्ग में भी विभिन्न जातियों व गोत्रों की उत्पत्ति हो जाने पर भी इनके द्वारा प्रतिस्पर्धा में वृद्धि होने के परिणामस्वरूप अधिकाधिक मंदिर, मूर्तियां, साहित्य आदि की विरासत ही निर्मित करवाई गई है। श्रमण वर्ग व श्रावक वर्ग का विग्रह, विखंडन, नये-नये पंथ आदि सभी विरासत के लिये उन्नयनकारी वरदान ही सिद्ध हुए हैं।

-शेष पृष्ठ सात पर

पाँव-पाँव चलने वाले सूर्य थे महावीर

संसार के अद्भुत आश्चर्य थे महावीर।
विषम-समय में अनिवार्य थे महावीर।
आसान नहीं महासागर अंजलि में भरना,
पांव-पांव चलने वाले सूर्य थे महावीर।।
न्याय के लिए नैतिकता का नीर चाहिये।
शान्ति के लिए समता का समीर चाहिये।
विश्व खड़ा है विनाश के कगार पर,
अहिंसा के अवतार प्रभु महावीर चाहिए।।
धधक रही चहुं ओर हिंसा की ज्वालाएं।
धड़ाधड़ खुल रहीं वधशाला मधुशालाएं।
प्रभु महावीर! शक्ति दो जूझने की हमें,
अब भी बिक रहीं यहाँ चन्दनबालाएं।।
सागर की गहराई से भी गहरा है उनका ध्यान।
आकाश की ऊंचाई से भी ऊंचा है उनका नाम।
घोर उपसर्ग, अपार कष्ट सहे समभावों से,
उन मृत्युंजयी कालजयी महावीर को प्रणाम।।

-डॉ दिलीप धींग

तीर्थंकरों से जुड़े सात महाकाव्य

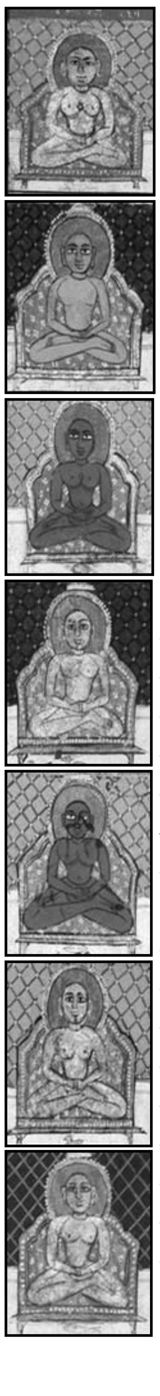

मध्यप्रदेश के नागदा निवासी मनोहरलाल कांठेड़ ऐसे प्रथम और एकमात्र महाकाव्यकार हैं जिन्होंने तीर्थंकरों से संबंधित सात महाकाव्यों की रचना कर अपनी गूढ़ काव्यशक्ति का परिचय दिया। ये महाकाव्य प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से लेकर शांतिनाथ, पार्श्वनाथ, अरिष्टनेमि, सुव्रत स्वामी, अष्टादश तीर्थंकर चरित्र और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी से संबंधित हैं।

गद्यगीत मिश्रित मालवी का मिठास भगवान ऋषभदेव के नखशिख वर्णन में उनके सिर, आंख, नाक, होठ तथा बालों की उपमा का अंदात दृष्टव्य है-

माथो जाणे पहाड़ की चोटी के आकार हरिको लागे है।
आंखा प्रभु री जाणे कमल रो सफेद फूल लागे है।।
प्रभु ऋषभ रो नाक गरूड़ चोंच हरिको लागे है।
होठ गणा नज लागे एकदम लालचट है।।
माथा रो एक-एक बाल सेमल रुई सो है।

भगवान ऋषभदेव का सिर पहाड़ की चोटी, आंखें सफेद कमल का फूल, नाक गरूड़ की चोंच, होठ एकदम लालिमा लिए और सिर का एक-एक बाल सेमल रुई की तरह है। इस तरह की उपमाएं कवि की नवीन दृष्टि की सूचक हैं जिनमें स्थानीय मालवी संस्कृति के रंगबोध की छाप दर्शित होती है। यही कारण है कि कवि की वर्णनशैली में मालवी का माधुर्य, उसकी गतिशीलता का प्रवाह तथा लोकाचारों एवं लोकविश्वासों का अपनापा सहज प्रस्फुटित हुआ मिलता है।

कांठेड़जी जैनधर्म, दर्शन एवं संस्कृति के ज्ञाता, सुधर्मी विद्वान ही नहीं, अपने जीवन में भी पूर्णरूपेण साधुमना संस्कारी हैं। उनके द्वारा रचित महाकाव्यों में लोकचित्त का जो रचाव और जीवनदर्शन है वह गेयता की दृष्टि से अधिक माधुर्य लिए है। ऐसा लेखन बौद्धिक चेतना से अधिक लोकचित्त की ही आराधना का आनंद होता है। जैन समाज के लिए ये महाकाव्य अप्रतिम धरोहर हैं किन्तु इनका प्रकाशित नहीं होना विडम्बना ही है। समाज को चाहिए कि जीवनभर अपनी साधना से उत्कृष्ट कृतियों का सृजन करने वाले कांठेड़जी की कृतियां उनके जीवनकाल में प्रकाशित कर उनका उचित अभिनंदन करे ताकि नई पीढ़ी को भी प्रेरणा मिल सके।

स्मृतियों के शिखर (7) : डॉ. महेन्द्र भानावत

बच्चनजी के तीन पत्र

पत्र-साहित्य का महत्व प्रारंभ में तो स्वीकार नहीं किया गया पर बाद में उसका महत्व स्वीकार कर साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा के रूप में उसे मान्यता मिली। यों पत्र व्यक्ति के जीवन का पारदर्शी आईना होते हैं। जीवनचक्र का हर पल प्रसंग घटना एक नई कल्पना विचार एवं अनुभूति का संचार कर जो नीड़ निर्मित करते हैं वे ही एक इतिहास, एक दास्तान बनकर हमारे वर्तमान, अतीत और भविष्य के स्पंदन झंकृत करते हैं।

पत्र-लेखन में उन सबकी विगत हमारे समृद्ध और सुखमय जीवन की रसज्ञता के रूप में मुखरित हुई मिलती है। सिलसिलेवार लिखे गये पत्रों में भारतीय दर्शन, इतिहास, संस्कृति तथा जीवन-रेखाओं के समृद्ध सरोकारों ने पूरे विश्व में ख्याति अर्जित की। इससे भारत की परंपराशील विरासत की प्रतिष्ठा को चार चांद लगे। साहित्यिक पत्रों ने साहित्य के सभी पक्षों को प्रभावित किया। साहित्य की स्थायी निधि के रूप में बहुत से पत्रों ने अमिट छाप छोड़ी है। कई पत्र साहित्यजीवियों की लेखन-कला से भी अधिक प्रभावी बने हैं।

श्री हरिवंश राय 'बच्चन' के पत्र इस दृष्टि से बेजोड़ ही हैं। उनकी हस्तलिपि हर एक के लिए पठनीय नहीं होने पर भी प्रत्येक के लिए आकर्षक प्रशंसनीय एवं महनीय है। फिर उनके हस्ताक्षर 'बच्चन' तो उनकी पहचान के ही पर्याय बन गये। उपनामों की परंपरा में सर्वाधिक चर्चित एवं सुहाना उपनाम बच्चन ही चर्चा में रहा। अन्य साहित्यकारों ने अपने हस्ताक्षरों में पूरे नाम के साथ उपनाम को लिखा किंतु हरिवंशराय ही ऐसे रचनाकार हुए जिन्होंने अपने बच्चन नाम को ही सर्वाधिक चर्चित किया। इतना कि लोग उन्हें उनके मूल नाम से कम, उपनाम बच्चन से ही अधिक जानने लगे।

बच्चनजी का लेटर हेड पर लिखा जो पत्र मेरे पास सुरक्षित है उसमें भी उनके नाम हरिवंशराय बच्चन के ऊपर उनके हस्ताक्षर किए हुए हैं। काली स्याही पर लाल स्याही में हस्ताक्षरित छपा लेटर हेड का यह पन्ना बच्चनजी की अपनी पसंदगी का भी छविमान दस्तावेज ही है जो उनकी पत्र-लिपि के साथ मेरी अमूल्य निधि ही बना हुआ है। बच्चन कभी उपनाम रहा पर अब तो गोत्र ही बन गया है। बच्चनजी के समान उनके पुत्र फिल्मों के महानायक अमिताभ बच्चन, उनकी धर्मपत्नी जया बच्चन, पुत्र अभिषेक बच्चन, बहू ऐश्वर्याराय बच्चन और पौत्री आराध्या बच्चन नाम से सुख्यात हैं। हरिवंशरायजी के दूसरे पुत्र अजिताभ बच्चन भी चर्चा में रहे।

हरिवंशराय बच्चन के पत्र तो और भी आये पर उनके तीन पत्र मेरे पास सुरक्षित हैं। तीनों पत्र मेरे द्वारा उनको लिखे गये पत्रों के उत्तर में हैं। लगा कि वे हर पत्र का उत्तर देते हैं और जरा भी विलंब नहीं करते। जिस सबब से उनको लिखा जाता है, यथासंभव उसका समाधान देते हैं। लेखन के बारे में अपनी राय व्यक्त करते हैं और ठीक से सुझाव भी लिख भेजते हैं। वे अपने बारे में, लेखन के बारे में भी लिख देते हैं ताकि पत्रों का आपसी सिलसिला बना रह सके। उनकी हस्तलिपि अत्यंत सुंदर किंतु पढ़ने में बड़ा श्रम मांगनेवाली है। न पढ़ पाने पर भी उनके लिखे पत्र बड़े अदब से संवारे रखने का मन बना रहता है।

मेरे पास उनके लिखे पत्रों में दो सन् 1985 के हैं। इनमें से एक अन्तर्देशीय और दूसरा लेटरहेड पर है। दोनों उनके निवास 'सोपान' बी-8, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली-49 के हैं। तीसरा अन्तर्देशीय पत्र अ-तिथि का है। इसमें उन्होंने अपनी उम्र दो कम अस्सी अर्थात् 78 वर्ष होने का जिक्र किया है।

9 अप्रेल 1985 को लिखे पत्र में उन्होंने मुझ से कभी दिल्ली निवास पर मिलने को और मिलने का समय तथा फोन नं. भी लिखे। अविरल रूप में यह पत्र इस प्रकार है-

हरिवंशराय बच्चन
'सोपान'
बी-8, गुलमोहर पार्क, दिल्ली-48
9.4.85
समान्य बंधु,
पत्र के लिए ध.
आपके क्रिया कलाप को विस्तार से
जानकर सुख मिला।
कभी आप इधर आएं तो आपसे
मिलकर प्रसन्नता होगी।
मझसे मिलने को संध्या 5-6
के बीच का समय उपयुक्त होता है।
संभव हो तो पहले फोन संपर्क
से मिलने का दिन समय निश्चित
कर दें। (फोन नं. 667555)
आपके मंगल कल्याण एवं आपके
सक्रिय सार्थक लेखक जीवन के लिए
शुभ कामनाएं

सादर
बच्चन

पुन: मैंने अपनी तीन पुस्तकें इधर प्रेस भेजी हैं
(1) आत्मकथा का चौथा खंड-'दश द्वार से सोपान' तक
(2) नया काव्य संग्रह - 'नई से नई पुरानी से पुरानी'
(3) 'मधुशाला' का स्वर्ण जयंती संस्करण मेरी नई भूमिका के साथ मधुशाला सर्वप्रथम अप्रेल 1935 में प्रकाशित हुई थी।

इसी पत्र में एक और हाशियेवाले स्थान पर लिखा था- डॉ. महेन्द्र भानावत की सेवा में

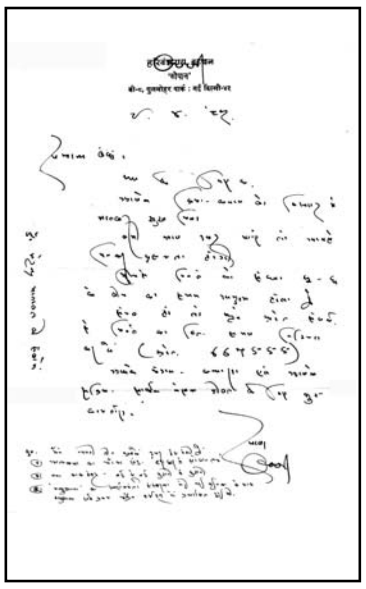

बच्चनजी का दूसरा पत्र 15 मई 1985 का लिखा हुआ है। इससे पूर्व मैंने बच्चनजी को मेरे द्वारा मीरांबाई पर किये गये शोधकार्य और भ्रमण स्थलों की जानकारी दी थी। यह भी लिखा था कि इस संबंधी मेरे लेख धर्मयुग तथा साप्ताहिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित होने को हैं। उन्होंने मेरे कार्यों की प्रशंसा करते हुए शुभकामनाएं व्यक्त कीं और प्रकाशित होने वाले लेख देखने को लिखा। पत्र इस प्रकार है-

समान्य बंधु
पत्र के लिए ध.
सद्भावना के लिए आभारी हूं।
मीरां पर जो काम आप
कर रहे हैं वो निश्चय ही महत्वपूर्ण
होगा। सफलता के लिए मेरी
शुभकामनाएं
सा. हि. तथा ध. यु. में आपके
लेख चित्तौड़ यात्रा संबंधी
छपेंगे उन्हें मैं देखूंगा।

सादर
बच्चन

सोपान
गुलमोहर पा.
न. दि.

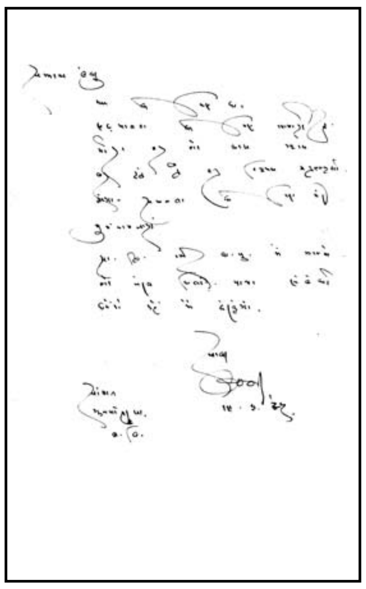

बच्चनजी का तीसरा पत्र भी सन् 1984 में लिखा प्रतीत होता है। इससे पूर्व मैंने उन्हें पत्र लिखकर स्वरूप व्यास के निधन की सूचना दी थी। स्वरूप व्यास ने वर्षों तक मुंबई में फिल्म्स डिवीजन में मुख्यत: डोक्युमेंट्री फिल्मों में अपनी वाणी द्वारा बड़ी ख्याति अर्जित की थी। उनका संपर्क गांधी, नेहरू, पटेल से लेकर ख्यात-प्रख्यात लेखको तथा सिने कलाकारों से था। बच्चनजी ने भी कभी उनके लिए लिखा था- 'उनकी वाणी की स्पष्टता उनके स्वभाव की पारदर्शिता है। उनके स्वभाव की विनम्रता और मनोज्ञता उनकी वाणी की गूंज है जो प्रत्येक श्रोता के हृदय से प्रतिध्वनित होती सी लगती है।'

स्वरूप व्यास उदयपुर के थे। उनके आखिरी वर्ष यहीं व्यतीत हुए तब वे मेरे सम्पर्क में रहकर हम मित्रों के घनिष्ट बन गये थे। मैंने उन पर राजस्थान पत्रिका में लिखा और उसकी कटिंग बच्चनजी को भेजी। बच्चनजी ने मेरे उस पत्र के जवाब में मुझे लिखा-

सोपान
गुलमोहर पार्क,
नई दिल्ली
समान्य बंधु,
पत्र के लिए धन्यवाद,
सद्भाव के लिए आभारी हूं।
वाणी का विराट वैभव! स्वरूप व्यास
की कटिंग भी देखी।
लेख सुंदर है।
मुझे भी याद किया
आपकी कृपा।
ज्यादा दिन जीने की यह सबसे बड़ी
वेदना है कि अनेक ऐसे साथी
छूटते जाते हैं।
व्यास को कभी निकट से देखा था।
प्यारे आदमी थे।
बड़ी जल्दी चले गये।
मैं अब 2 कम अस्सी का हूं।
अब भी कुछ न कुछ लिखता रहता हूं।
हाल ही मैंने अपनी आत्मकथा का
चौथा खंड पूरा किया।
आप क्या विशेष लिख रहे हैं?
उसी को कुछ बहुमूल्य दें
शुभकामनाएं

सादर
बच्चन

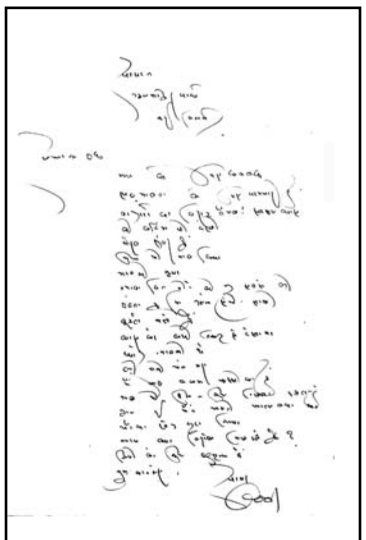

कल्लाजी द्वारा नाग भस्मी यज्ञ जो पहलीबार जनमेजय द्वारा नागदा में किया गया था

धरती पर जब पाप असहय हो जाता है तब उसके शमन के लिए यज्ञ करने की परंपरा रही है। ऐसा ही यज्ञ 1985 की नवरात्रि का, मैं कभी नहीं भूल सकूंगा। यों प्रतिवर्ष ही नवरात्रि के अवसर पर काली कल्ला धाम वलाद (अहमदाबाद) की गादी पर मेरा जाना होता रहा। बनती कोशिश अष्टमी को जाकर दसमी तक वहीं रहना होता। इस नवरात्रि पर कल्लाजी ने एक विशेष यज्ञ किया। उनके सेवक सरजुदासजी ने भाव में अष्टमी की रात्रि को बताया दिया था कि जन हानि से त्राण पाने के लिए ऐसा यज्ञ किया जाएगा जो पांच हजार वर्ष पूर्व किया गया था तब नागों के बढ़ते प्रकोप से मुक्ति पाई गई थी।

ऐसा यज्ञ जनमेजय ने करवाया था। इसमें जगत के सारे नाग भस्म कर दिये गए थे। एक वासुकि बच निकला जो जमीं फाड़ ठेठ नीचे चला गया था। उसी वासुकि का परिवार बढ़ता-बढ़ता नौ कुली नाग और फिर चौरासी खांपों में विकसित हुआ। भीलों के गवरी खेल में राजा वासुकि की गावणी में पूरी कथा आती है जिसका निवास सातवें पाताल में बताया गया है।

जनमेजय के उस यज्ञ में सवा फीट गहरी वेदी में इतने नागों का दाह हुआ कि ढाई फीट ऊंची भस्मी का ढेर हो गया। उसमें तक्षक ने परीक्षित को डस लिया था जिससे उसकी अकाल मौत हो गई। जनमेजय ने समस्त नागों का दाह कर बदला लिया। जिस स्थान पर नाग दाह किया गया वहां आगे जाकर जो गांव बसा उसे नागदा कहा जाने लगा। आज मध्यप्रदेश में नागदा रेलवे जंकशन है। अहमदाबाद में हुए भयंकर दंगों की पुनरावृत्ति न हो इसलिए यह यज्ञ किया गया। यज्ञ के दौरान क्षण भर के लिए भयंकर तेज लपटें हुईं और आकाश बादलों से आच्छादित हो गया। वेदी से उठी भयानक लपटों में एक भीमकाय सर्प दृष्टिगत होते ही ओझल हो गया।

रात्रि में हमारी ज्ञान गादी लगी जिसमें मालिक ने बताया कि यज्ञ में अनिष्ट होने की आशंका थी पर सबकुछ शांतिपूर्वक हो गया। वासुकि का स्वयं पधारना हुआ तब धरती कंपायमान हुई। उन्होंने यज्ञ की सुगंध ली और पुन: धरती फाड़ अलोप हो गये। देवता की शक्ति का यह खेल सर्वथा निराला है। सारा करिश्मा मनुष्य के ज्ञान और बुद्धि से परे है।

मेरे साथ डॉ. सुधा गुप्ता थीं। अष्टमी की प्रात: हम सरजुदासजी के साथ बगीचे का भ्रमण कर रहे थे तभी उन्होंने वहां लगे छोटे से अशोक वृक्ष की पांच-पांच कोंपलें हमें खाने को दीं। कहा कि इससे वर्ष भर ही व्यक्ति सर्व प्रकार के शोक से दूर रह अशोक बना रहता है। इसी दिन हनुमानजी ने सीताजी को अशोक वृक्ष की कोंपलें खाने को दी थीं तब जाकर सीताजी शोकरहित हुई।

मालिक ने बताया कि जैसे धरती-धरती का फर्क होता है वैसे ही अग्नि-अग्नि में फर्क होता है। नन्ही अग्नि प्रकाश देती है जबकि युवा अग्नि भोजन पकाकर हमारी क्षुधा शांत करती है किंतु प्रचंड आग तो सर्वस्व नष्ट कर देती है। जब से वन मरे हैं, हमारे मन भी मरे पड़े हैं। यह कल युग है, लग रहा जैसे साक्षात् काल युग है। -म.भा.

श्रम एवं संयम की जीवनशैली से आत्मनिर्भरता की ओर

-डॉ. दिलीप धींग

जैन धर्म और श्रमण संस्कृति का गौरवशाली प्रासाद जिन आधारभित्तियों पर खड़ा है, उनमें एक आत्मनिर्भरता भी है। श्रमण का एक अर्थ होता है-श्रमपूर्वक जीवन जीने वाला यानी आत्मनिर्भर। आगम ग्रन्थों में श्रमण शब्द की महिमा का पता इससे चलता है कि उसे तीर्थंकरों के साथ भी प्रयुक्त किया गया। जैन श्रमण-श्रमणियों का जीवन आत्मनिर्भरता का जीवन्त रूप होता है। जैन दर्शन का वस्तु स्वातंत्र्य का सिद्धांत आत्मनिर्भरता की सत्ता व महत्ता का सूक्ष्म विश्लेषण करता है। तीर्थंकरों के जीवन का हर कदम और आगम-साहित्य का हर पृष्ठ आत्मनिर्भरता की प्रेरणा व सन्देश देता है। अभिनिष्क्रमण के बाद भगवान महावीर कर्मारग्राम के समीप वनखण्ड में ध्यान में स्थिर थे, उस समय साधनाकाल का पहला उपसर्ग ग्वाले ने उपस्थित किया। तब देवराज इन्द्र ने प्रभु के समक्ष आकर निवेदन किया- 'प्रभु लोग अज्ञानी और मूढ़ हैं, आपको साधनाकाल में अनेक कष्टों का सामना करना पड़ेगा, मुझे आज्ञा प्रदान कीजिये कि साधनाकाल में मैं आपके कष्ट-निवारण किया करूँ।' महाश्रमण महावीर ने इन्द्र की प्रार्थना का उत्तर देते हुए कहा-'देवराज! आत्मसाधक के जीवन में आज तक न कभी ऐसा हुआ, न होता है और न भविष्य में होगा कि आत्मसिद्धि किसी दूसरे के बल पर या परनिर्भरता से प्राप्त की जा सके।' भगवान महावीर के इस उत्तर में सम्पूर्ण जैन धर्म, दर्शन व संस्कृति का सार समाया हुआ है। साधक का आदर्श है, वह अकेला पुरुषार्थ से चलता रहे- एगोचरे खगविसाणकप्पे। 'महावीर चरियं' में नेमिचन्द्र लिखते हैं- करिसंघट्टे सीहो, अहिलसइ किमन्न साहेज्जं? अर्थात् विराट्काय हाथियों से घिर जाने पर भी सिंह कभी दूसरों के सहयोग की अपेक्षा नहीं करता है।

साधनाकाल में भगवान महावीर को क्षणभर के लिए निद्रा आ गई थी। उस दौरान उन्होंने जो दस स्वप्न देखे, उनमें से पहला, सातवां, नवमां और दसमां स्वप्न पुरुषार्थ और आत्मनिर्भरता की प्रबल प्रेरणा देते हैं। यथा-

(1) मैं एक भयंकर ताड़-सदृश पिशाच को परास्त कर रहा हूँ। (2) मैं तरंगाकुल महासमुद्र को अपने हाथों से तैर कर पार कर रहा हूँ। (3) मैं अपनी वैडूर्य वर्ण आँतों से मानुषोत्तर पर्वत को आवेष्टित कर रहा हूँ। (4) मैं मेरू पर्वत पर चढ़ रहा हूँ।

भाग्यवाद और नियतिवाद के अतिशय प्रचार से जब भारतीय चेतना में एक जड़ता-सी आ गई थी, ऐसे में जैन धर्म के पुरुषार्थवाद ने मानव के बाह्य और आन्तरिक जीवन में खुशियाँ लौटाईं। आज बेरोजगारी के भयावह संकट के दौर में पुरुषार्थवाद समाधान देता है। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान ऋषभदेव ने असि, मसि, कृषि तथा विद्या, वाणिज्य और शिल्प का बोध प्रदान किया। जैन ग्रंथों में आत्मनिर्भरता के सूत्र भरे पड़े हैं। उनमें से सार रूप में चार इस प्रकार हैं-

पहला सूत्र पुरुषार्थ आत्मनिर्भरता का प्रधान सूत्र है। यह हमें निष्ठावान और कर्तव्यपरायण बनाता है। कार्य कोई छोटा या बड़ा नहीं होता। वह अच्छा या बुरा हो सकता है। छोटे से छोटा अच्छा कार्य करने में भी हमें संकोच नहीं करना चाहिये। पुरुषार्थ के क्षितिज पर ही सिद्धि का सूरज उगता है। जो पुरुषार्थ नहीं करता उसका भाग्य भी सो जाता है।

दूसरा सूत्र अयाचक भाव का है। आत्मनिर्भरता के लिए आवश्यक है कि मानव अपने मन में दीनता और हीनता नहीं पैदा होने दे। वह अपनी शक्तियों व क्षमताओं को पहचाने और आत्मविश्वास से आगे बढ़े। णमोकार महामंत्र में पंच परमेष्ठी को वन्दन-नमस्कार है। इसमें कहीं कोई याचना नहीं है।

तीसरा सूत्र व्यसन मुक्ति है जो व्यक्ति को शक्तिहीन कर देता है। व्यसन कोई भी हो, वह व्यक्ति की स्वतंत्रता छीन उसे पराधीन बना देता है। जैनों की सम्पन्नता की एक वजह उनका व्यसन-मुक्त होना है। आत्मनिर्भरता की दिशा में व्यसन-मुक्ति एक ऐसा स्वर्ण-सूत्र है जिसमें केवल व्यक्ति ही नहीं, वरन् समुदाय और राष्ट्र भी आत्मनिर्भर बनते हैं। चौथा सूत्र संयमित जीवन का है। संयमित जीवन जीने वाला व्यक्ति परिस्थितियों का दास नहीं होता। वह धन, स्वास्थ्य और प्राण-ऊर्जा की बचत करता है। जो संयमी होगा उसमें अपरिग्रहता का भाव स्वत: ही पैदा हुआ मिलेगा। श्रम और संयम की यह जीवनशैली हमें अधिक समर्थ, स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाने में सक्षम है।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	
350/-	
जनजाति जीवन और संस्कृति	
295/-	
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	
200/-	
आदिवासी जीवनधारा	
395/-	
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	
150/-	
राजस्थान के लोकनृत्य 200/-	
गुजरात के लोकनृत्य	
200/-	
राजस्थान के लोक देवी देवता-----	
150/--	
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	

कावड़ में महावीर की दर्शना

भारत देश परंपराओं का देश है। यहां बहुत सी ऐसी परंपराएं जीवित हैं जिनसे हमारे देश की पहचान बनी हुई है। राजस्थान के मेवाड़ अंचल में कावड़ नामक काष्ठ-शिल्पकला किसी समय लोकानुरंजन के साथ-साथ धार्मिक आस्था का एक सशक्त माध्यम रही जिसके कारण भक्तजन घर बैठे विविध तीर्थों, लोकसम्मत देवी-देवताओं, आदर्श महापुरूषों एवं भक्तों के दर्शन कर पुण्य अर्जित करता था लेकिन वह कावड़ आज अपने लक्ष्यों में सिमट कर ड्राईंग रूम की शोभा बनती जा रही है।

कावड़ की प्रचीनता के संबंध में कहा जाता है कि उज्जैन के राजा विक्रमादित्य के दरबार में कंक नामक दरबारी कवि था जिसे किसी बड़ी गलती के कारण वहां से पलायन करना पड़ा। तब वह उज्जैन से राजस्थान के चित्तौड़ जिले के बस्सी गांव आया। यहां उसने काष्ठ शिल्पी खाती जाति के कलाकारों से हाथ-पांव विहीन धड़पुतली बनवाई और उसका खेल प्रारंभ किया। बाद में इस परंपरा में जो कठपुतली नचाने वाले हुए वे अपने को कंक के वंशज कंकाली कहने लगे। कंकाली भाटों के दो परिवारों में एक परिवार ने अलग से अपना अस्तित्व बनाए रखा और उसने कठपुतली की बजाय कावड़ बांचना प्रारंभ किया। कालान्तर में कावड़ बांचने वाले कावड़िया भाट कहलाए और ये अपने को कंकाली नहीं कहकर काली के उपासक कहने लगे।

कावड़ संबंधी उदयपुर की विज्ञान समिति द्वारा कुछ वर्ष पूर्व श्रीमती उषा राव के संयोजन में महिला विकास अभिकरण के सहयोग से उदयपुर जिले की महिला साथिनों की कार्यशाला आयोजित की गई जो अत्यन्त सफल रही। इस कार्यशाला में महिलाओं द्वारा ही काष्ठ की बजाय कार्डशीट की कावड़ बनाई गई और उन्हीं के द्वारा उसका वाचन, मंचन रखा गया। परिणामस्वरूप यह कार्यशाला ग्रामीणजनों में चेतना जगाने की दृष्टि से बड़ी सफल और कारगर सिद्ध हुई। उदयपुर की एसआईईआरटी, सीसीईआरटी, अलर्ट संस्थान तथा अन्य संस्थाओं ने भी कावड़ को लेकर कार्यशालाएं आयोजित कीं। इससे मुझे लगा कि प्रौढ़ शिक्षा, महिला चेतना, ग्रामीण विकास, अल्प बचत, रोजगार, स्वास्थ्य आदि के कोई विषय हों, कावड़ के प्रयोगधर्मी रूपों से आमजन को शिक्षित, प्रशिक्षित एवं चेतनामय बनाया जा सकता है।

प्रौढ़ शिक्षा समिति, जयपुर द्वारा आयोजित एक कार्यशाला में मैंने साखर (साक्षर) कावड़ पर जो स्क्रिप्ट लिखा उसका एक नमूना द्रष्टव्य है-

सोनो कै म्हूं सुवावणो जो सुवरण म्हारौ रंग।
थूं काळा मूंडा री चिरमली जो बैठी म्हारै संग॥
हरिया मारी बेलड़ी नै रातो म्हारौ अंग।
थारै साथै म्हूं तुली जो काळो मूंडो रंग॥
हूरां लारै हांटा नी खावणा।

कावड़ कला को बचाये रखने के लिए जो प्रयोग किये गये उनमें परंपराशील काष्ठ शिल्पी मांगीलाल मिस्त्री का योगदान बड़ा उपयोगी और मूल्यवान रहा। मिस्त्री ने परंपरागत एक फीट की कावड़ के अलावा छोटी से छोटी माचिस के आकार की कावड़ से लेकर बड़ी से बड़ी साढ़े सात फीट तक की कावड़ बनाई।

प्रयोग के रूप में रामजीवन के साथ कृष्णजीवन को भी जोड़ दिया। इसके अलावा महात्मा गांधी,आचार्य विनोबा, राणाप्रताप, मीरांबाई, वीर दुर्गादास, देवनारायण, गवरी, वीर तेजाजी, करणीमाता, गणेश, दशामाता, पृथ्वीराज चौहान, मूमल महेन्द्र, ढोला मारू, गणगौर, कल्लाजी राठौड़, आचार्य महाप्रज्ञ आदि की कावड़ें बनाकर इस कला को जीवन्त रखा।

मिस्त्री की बनी कावड़ें विदेशों के कई संग्रहालयों की शोभा बनी हुई हैं। उदयपुर में आने वाले पर्यटक भी उनकी कावड़ कला से प्रभावित होते हैं किन्तु अब कावड़ का वह परंपरागत स्वरूप नहीं रहा। जो कावड़ ग्रामीणजनों में मनबहलाव और धर्म-पुण्य कमाने का कलर टीवी बनी हुई थी

वह अब ऊंचे लोगों के ड्रॉईंग रूम में कैद होकर चार चाँद लगा रही है। भगवान महावीर की कावड़ दस पाट की सवा फीट ऊंची है। इसके सभी पाटों में दोनों ओर भगवान महावीर के गर्भ रूप में अवतरण से लेकर जन्म रूप में प्रकट होने, दीक्षा लेने, केवलज्ञान प्राप्त करने और निर्वाण होने तक के लोकजीवन के महत्वपूर्ण घटना-प्रसंगों को चित्रबद्ध किया है।

महावीर के घटना-प्रसंगों में गर्भधारण के पश्चात माता त्रिशला द्वारा चौदह स्वप्न दर्शन, वस्त्रालंकार का त्याग और केशलुंचन, शूलपाणि यक्ष के विविध प्रतिकूल उपसर्ग, चन्द्रकौशिक का मरणांत उपसर्ग, चंदनबाला द्वारा उड़द के बाकले का दान, गोप द्वारा दोनों कोनों में काठ के कीले ठोकना जैसे चित्रफलक सहज ही श्रद्धालुओं को अभिभूत करते हैं।

यह प्रसन्नता का विषय है कि कावड़ शोधकर्मियों एवं विद्वानों की नजरों में भी महत्वपूर्ण बनी है। उदयपुर के सुखाड़िया विश्वविद्यालय से कावड़ पर पी-एच.डी की उपाधि के लिए कार्य हो चुका है वहीं मुम्बई की इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी से नीना सबनानी मूल्यवान शोधकार्य कर रही है।

इसके लिए नीना चार-छह बार उदयपुर आ चुकी है और मेवाड़ के बस्सी तथा मारवाड़ तक के कई गांवों में घूमकर कावड़ निर्माताओं एवं कावड़ियों के साथ रहकर गहन अध्ययन कर चुकी है।

डॉ. भानावत की कावड़ नाम से पहली पुस्तक 1976 में प्रकाशित हुई। इसके बहुत बाद डॉ. रामसिंह भाटी का शोध प्रबंध राजस्थान की लोक परंपरा में कावड़ चित्रण तथा नीना समदानी लिखित कावड़ ट्रेडीशन ऑफ राजस्थान पुस्तकें छपीं।

धर्मनिष्ठ मेहताजी का निधन

कानोड़ में सामाजिक सरोकारों के मिलनसार, सुधर्मी एवं सरल स्वभावी सुश्रावक श्री कन्हैयालालजी मेहता का 95 वर्ष की उम्र में 9 अप्रेल को निधन हो गया। प्रतिदिन जैन दर्शनकारी नेमनियम से उनकी चर्या का उदय होता।

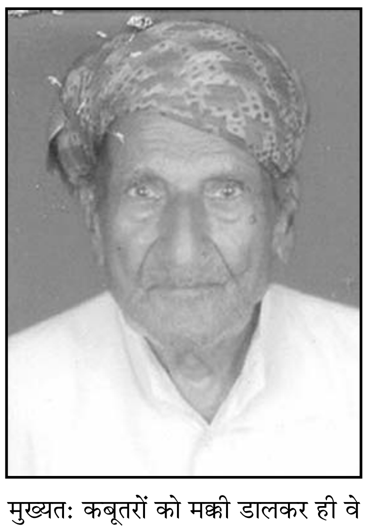

मुख्यत: कबूतरों को मक्की डालकर ही वे विधिवत जीवनचर्या प्रारंभ करते। जैनाचार्य गणेशलालजी, आचार्य नानेश और वर्तमान आचार्य रमेश के प्रति उनकी प्रबल आस्था-श्रद्धा रही।

उन्होंने अपनी चारों पुत्रियों तथा दोनों पुत्रों को उच्च शिक्षा-दीक्षा के सुसंस्कार दिये फलस्वरूप सभी शिक्षा, स्वास्थ्य, समाज, उद्योग तथा वाणिज्य के क्षेत्र में नामवरी सेवाएं दे रहे हैं। उनकी स्मृति में उनके परिजनों ने विविध धार्मिक स्थलों, शिक्षा संस्थानों तथा सामाजिक कार्यक्रमों में प्रर्याप्त अर्थ सहयोग दिया। शब्द रंजन की हार्दिक शोकांजलि।

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 15 अप्रेल 2016

जय-जय भारत माता

यह देश मसखरों का भी कम नहीं है। कठपुतली खेल में चोपदार खबरदार कहकर सावधान करता है वैसे ही टीवी चैनल और अखबारों को सावधान कर कहा गया- खबरदार मैं भारत माता की जय नहीं बोलूंगा। खबरदारों ने बड़ी सावधानी बरती कि उन्हें सनसनीखेज समाचार हाथ लग गया जिससे वे जनता का खासा ध्यान आकर्षित कर सकेंगे।

इससे और कोई सवाल उपजे, न उपजे पर यह भारत माता कौन है? कोई देवी? कोई प्रतिमा? कोई महामानवी? जिसके लिए यह जिद्द की गई। आजादी के बाद सारे स्कूलों की सारी पढ़ाई भारत माता की जय कहते हुई। गुरुजी मुखर स्वर में बोलते- भारत माता की तो शिष्य उसकी पादपूर्ति में समूहस्वर से कहते- 'जय।' तब किसी भी छात्र के मन में, मस्तिष्क में, दिल में भारत माता की कोई तस्वीर नहीं उभरती।

धीरे-धीरे ज्यों-ज्यों बड़े हुए, पाठ्य पुस्तकों में बड़े-बड़े कवियों की, कविताएं पढ़ने को मिलीं। उन सबमें भारत माता की ही प्रशस्ति मिली। फिल्मों में भी भारत माता का उदात्त वर्णन दर्शकों को मोहित करता रहा। बड़े-बड़े राजनेताओं के भाषण में अपार जनसमूह उमड़ता। भाषण समाप्ति के बाद 'भारत माता की जय' से ही सबको शकुन मिलता।

दरअसल भारत माता का जयकारा भारत राष्ट्र के शिल्प, सौंदर्य, चैतन्य, अस्मिता और अजस्त्र का एक मिथक, एक प्रतीक, प्रतिबिंब और पारदर्शिता का जीवंत जय-विजय का ही शुभम उद्घोष है।

पत्र-पिटारी

शब्द रंजन के 1 मार्च के अंक में बड़े आकार के डेढ़ पृष्ठों में स्मृतियों के शिखर (4) स्तंभ में डॉ. महेंद्र भानावतजी ने मेरे पर 'जब अम्बू शर्मा ने मेरी मृत्यु पर पोस्टकार्ड लिखा' शीर्षक से लेख लिखा। इस लेख ने मुझे प्रफुल्लित कर दिया कारण कोई भी व्यक्ति अन्य लेखक से इतने विस्तार में क्यों पुजवाएगा? विशेषता यह कि उनके पास मेरे सब पत्र सुरक्षित रहे हैं। मैं तो आकंठभर तक अभिभूत हो गया। कृपया उनका, सभी संतानों का, पोते-पोतियों का रंगीन फोटो भेजिये।

मैं 6 मार्च 16 को झुंझुनूं गया था। प्रथम बार वायुयान से आया-गया। 24 को वापस कोलकाता आ गया। 16 दिनों की डाक में शब्द रंजन मिला आभार। यह लेख मेरे संग्रह में आजन्म सुरक्षित रहेगा जी तथा मैं इसे पुनः-पुनः पढ़ता रहूंगा जी। मेरा जन्म 1.11.1934 का है। उनकी जन्मतिथि कब रहती है जी। देवजी कोठारी, राजेंद्रजी बारहठ, ब्रजमोहनजी जावलिया, भगवतीलालजी व्यास आदि उत्तम साहित्यकारों को मेरा सादर प्रणाम कह दिया जी।

1954 में श्री देवीलाल सामर झुंझुनूं पधारे थे एवं ढोलामारू प्रस्तुत किया था। सात मील दूर बगड़ गांव में दूलिया राणा भी यही नाट्य प्रस्तुत कर रहे थे। शांत रात्रि में 7 मील दूर से श्री सामरजी ने दूलिया की ध्वनि सुन ली। दूलिया राणा चिड़ावा ग्राम का था। तब चिड़ावा में दुर्लीचदजी की बैठक में नवरत्न बैठते थे। कोलकाता में सेठजी ने एक रूपये के नोट जलाकर अंग्रेज अतिथि को चाय पिलाई थी। रामकृष्ण परमहंस भी अंतिम समय में उन्हीं की बगान बाड़ी में विश्राम किया करते थे।

-अम्बू शर्मा, संपादक नैणसी

शब्द रंजन (अंक 6) द्वारा गणगौर पर बड़ी महत्वपूर्ण जानकारी पढ़ने को मिली। गणगौर माता के साथ मेवाड़ में भइया की पूजा तो नहीं होती पर पूजा का व्रत लेने पर अनेक महिलाओं को पुत्र प्राप्ति हुई है फलस्वरूप उस परिवार में गणगौर पूजा की परंपरा का विधान बना। एक घटना का जिक्र करना चाहूंगा। कोई 30 वर्ष पूर्व गोरधन विलास, उदयपुर के भगवतीलाल पंडवाल ने गणगौर-ईसरजी का जोड़ा बनवाया। उनके देखादेख एक और परिवार भी कहीं से एक जोड़ा खरीद लाया किंतु उस परिवार को मनवांछित फल नहीं मिला। एक दिन स्वप्न में कहा कि जो जोड़ा खरीदा गया उसकी लकड़ी सूल गई है और उसमें जीव पड़ गया है अतः दूसरा नया जोड़ा लाकर उसकी पूजा करो तो वांछित फल मिल सकेगा। यही किया गया। फल की प्राप्ति यानी जिनके कूख नहीं चल रही थी उनके कूख चलने लगी। संतान होने का फल मिलने लगा। घर में सुख-समृद्धि आई। ऐसे करते-करते गोरधन विलास क्षेत्र में ही वर्तमान में 18 गणगौरों की सवारी निकाली गई। पूछने पर बताया कि माता गणगौर ने मनचाही मुराद पूरी की है। उन घरों में आनंद ठाठ है। ब्याह-शादी तथा अन्य संस्कारों पर किया गया खर्चखाता भी सबको संतोष दे गया और हर तरह से रामजी राजी है। गणगौर बनाने वाले जानते हैं कि उन्हें ले जाने वाले किस रंग ढंग से समूह रूप में उल्लासपूर्वक आते हैं और आशा से अधिक मेहनताने के साथ-साथ पुरूष के लिए सरपाव तथा महिला के लिए घाघरा-साड़ी की भेंट भी लाते हैं।

-बालकृष्ण वसायती

साहित्य, कला, शोध एवं सांस्कृतिक परिवेश के प्रख्यात परिवार की 'शब्द रंजन' पाठकों को एक महान देन है। बालकवि बैरागी लिखित कवि सम्मेलन विषयक कथ्य एवं उनके लिए लिखा गया तथ्य बड़ा ही अच्छा लगा।

-डॉ. विनोद सोमानी 'हंस'

इतने सुन्दर कलेवर, शब्दों और आकर्षक प्रस्तुति वाला पाक्षिक कम ही देखने को मिलता है। भाषा सरल और साहित्यिक है। धड़ाधड़ निकल रहे पत्रों की भीड़ में यह विजय स्तंभ की तरह अडिग खड़ा दिखाई देता है। भाषा में लालित्य नया प्रवाह देखने को मिला है। जैसे बैरागीजी को बधाई कॉलम में 'हमारे गांव कानोड़ में भी उनकी वाणी कल्याणी बनकर जयकारी गई।' **-नागराज शर्मा, पिलानी**

पोथीखाना

'परम्परा' के संपादक डॉ. भाटी पर उम्दा पुस्तक

यह सुखद प्रसंग है कि डॉ. नारायणसिंह भाटी पर उनके सुयोग्य पुत्र गिरधरगोपाल सिंह ने एक अच्छी जानकारीपरक पुस्तक का संपादन डॉ. दीनदयाल ओझा से करवाया। डॉ. ओझा स्वयं अच्छे विद्वान और डॉ. भाटीजी के साहित्य के पुख्ता समझू तथा समकालीन सहयात्री रहे हैं। अपने 22 पृष्ठीय संपादकीय में डॉ. ओझा ने भाटीजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समग्र निचोड़ देकर उनके अवदान को प्रसादात्मक भाव से परोस दिया है। डॉ. भाटी राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति के गहरे अध्ययनान्वेषी तथा काव्यकला के अप्रतिम कवि थे। उनकी एक पहचान परंपरा नामक पत्रिका के कौशल-कुशल संपादन की भी थी। एक सौ एक अंक उनके द्वारा संपादित हैं जिनमें राजस्थान की विपुल सामग्री का समावेश डॉ. भाटी की दृष्टि-संपन्नता को चकित करने वाला है।

प्रस्तुत पुस्तक 'युगप्रेरक : डॉ. नारायणसिंह भाटी' में विभिन्न विद्वानों द्वारा लिखे महत्वपूर्ण आलेख हैं जो डॉ. भाटीजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सधा हुआ सटीक तथा समालोचनीय अध्ययन लिए हैं। यह अध्ययन डॉ. भाटी की समग्रता को समझने और उन पर विस्तार से लिखने, समझने तथा उनके चिंतनपूर्ण मानस की तह तक पहुंचने की राह खोलता है। डॉ. आईदानसिंह भाटी ने उनके मूल्यांकन का साररूप प्रस्तुत करते हुए ठीक ही कहा- 'डॉ. भाटी के लेखन में रोचक विषय-विविधता, शैलीगत आवेग-संवेग तथा अनुभूति की गहराइयां हैं जो राजस्थानी संस्कृति और मानवता के साथ घनिष्ठ संबंध रखती हैं। उन्होंने अपने सृजनधर्मी दायित्व को गहराई, सुधताई और अर्थवत्ता के साथ निभाया है। वे एक सफल अनुभव सिद्ध, अपूर्व एवं प्रज्ञा-प्रदीप्त कवि हैं।' पुस्तक के संपादन में डॉ. दीनदयाल ओझा के साथ डॉ. भवानीसिंह पातावत का सहयोग उल्लेखनीय है जो स्वयं इतिहास और विविध कलाओं के सधे साहित्यकार हैं।

पुस्तक- युगप्रेरक : नारायणसिंह भाटी, गिरधर प्रकाशन, 14/14, दुर्गादास नगर, पावटा, जोधपुर-342010, मूल्य 250/-

व्रतकथापरक बहुमूल्य ग्रंथ

ऐसा कहा गया है कि एक सूप में जितने राई के दाने आ सकते हैं उतने ही वर्षभर में आने वाले व्रत हैं। इन्हें करने वाला समुदाय महिलाओं का है। व्रतों में सबसे बड़ा व्रत दशामाता का है जो होली के दूसरे दिन से दस दिन तक चलता है। प्रतिदिन कम से कम भी पांच कहानियां सुनकर महिलाएं अन्न ग्रहण करती हैं। इस व्रतानुष्ठान की सौ से अधिक कहानियां हैं और सबसे बड़ी कहानी नल राजा और दमयंती रानी की है।

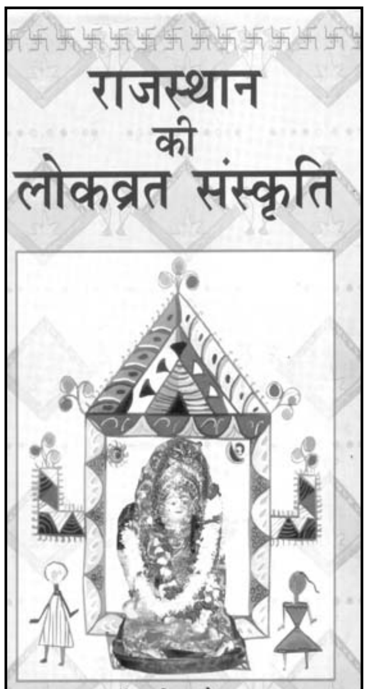

प्रस्तुत पुस्तक डॉ. कविता मेहता द्वारा दशामाता व्रत कथाओं को केंद्र में रखकर लिखी गई शोधकृति है। दस पृष्ठीय भूमिका में डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू ने कई शास्त्रों के उद्धरणों के साथ भारतीय जीवन परिवेश में व्रत कथाओं के प्रारंभ विकास तथा अत्याधुनिक स्थिति पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

कुल 8 अध्यायों में लेखिका ने व्रतकथाओं के माहात्म्य ये लेकर, व्रतानुष्ठान, कथा कथन शैली, दशामाता व्रतानुष्ठान, व्रतकथाओं का वर्गीकरण एवं अभिप्राय, व्रतांकन थापा और पूजन विधि, व्रतकथाओं में निहित समाज, संस्कृति एवं साहित्यिक तत्वों की अभिव्यक्ति पर विस्तार से प्रकाश डाला है। यही नही, परिशिष्ट में दशामाता विषयक राजस्थानी में 51 कहानियां दी गई हैं जो इस समग्र अध्ययन की मेरुदंड बनी हैं। दशामातापरक लोकगीत भी दिये गये हैं। थापांकनों के रंगीन चित्रों ने पुस्तक को और अधिक आकर्षण दिया है।

डॉ. रामगोपाल शर्मा दिनेश ने इस पुस्तक के संबंध में अपने उल्लेखनीय मंतव्य में कहा-डॉ. कविता का शोधग्रंथ राजस्थान की लोकव्रत संस्कृति के अनेक गवाक्ष खोलने वाला वहां के जनजीवन का ही दर्पण नहीं है, बल्कि समूचे भारत की सदियों पुरानी जनास्थाओं को भी नवजीवन देता है जिनके बल पर इस देश के जीव मंगल और चंद्र पर पानी खोजने नहीं जाते, अपने अंतर की प्यास को पहले पहचानते हैं। मुझे इस बात का गर्व है कि चि. कविता ने बहुत कम उम्र में इतना श्रेष्ठ साहित्यिक सार्थक समाज-विवेक प्रदर्शित किया है।

पुस्तक दिल्ली के सुभद्रा पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स से प्रकाशित 350 रूपये मूल्य की है।

डॉ. नागराज शर्मा की 'अेक अदद सुदामा'

'अेक अदद सुदामा' की कई वानगियां पढ़ीं। यह पोथी पूर्णरूपेण व्यंग्य प्रधान नहीं लगीं। व्यंग्य के छींटे किसी दाल को फ्राई करने सदृश हैं जो स्वाद बढ़ा देते हैं। बड़ी खूबसूरती से साधारण से साधारण घटना प्रसंग को लेखक ने कलम के स्पर्श से दिलदार बनाकर कौतुहल पैदा कर दिया है।

यह चुहल और चपत जिस चंचलाई से दी जाती है वह उस फोड़े की तरह लगती है जिसका दर्द पाकर भी जिसे मीठी-मीठी खाज के कारण सहलाने का मन करता है। विषय का चयन बड़ा लाजवाब रहा है और वैसी ही उपमा, ओपमा ; पाठक का मननिरंतर पढ़ने को उत्सुक रहता है।

पुस्तक लेखन में न हास्य बोदा है न व्यंग्य तीखा। प्रमुख तो हंसी है, ठट्ठा है, चिरौरी है, दिल्लगी है, ठाठ-ठसक है, व्यंग्य छिपा हुआ है रस्सी में कस्सी की तरह जो प्रस्तुति को कसावट देता है। जग हंसाई के लिए हंसी जरूरी है। हंसाई जिसकी होती है उसकी फंसाई होती है। हंसाई करने वाले तो हंसते ही रहते हैं। व्यंग्यकारों की पंक्ति में ये व्यंग्य अपनी अलग तख्ती लिए हैं।

शीघ्र प्रकाशित

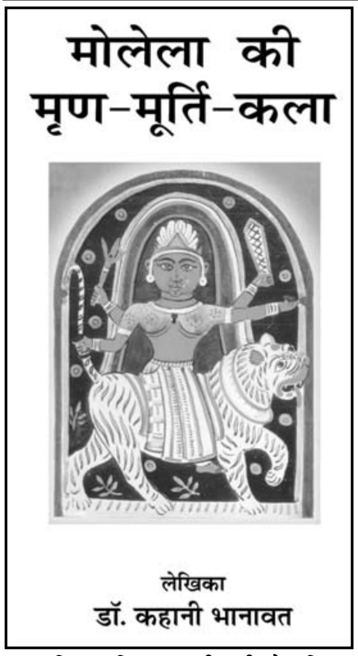

विश्वप्रसिद्ध हल्दीघाटी के निकट बसे उदयपुर संभाग के छोटे से गांव मोलेला के कुम्हार परिवारों द्वारा निर्मित लोक देवी-देवताओं की माटी की मूर्तियों पर पहली बार लोकधर्मी समाजशास्त्रीय अध्ययन। आर्यावृत्त संस्कृति संस्थान, दिल्ली से प्रकाशित।

''यदाकदा ही ऐसी पाण्डुलिपियां सामने आती हैं जिन्हें आप एक बैठक और विशेष एकाग्रता के साथ पढ़ लेते हैं। इस पाण्डुलिपि को मैं एक ही बैठक में मात्र पचास मिनिट में पढ़ गया। मुझे आश्चर्य है कि इतने पृष्ठों की पूरी पाण्डुलिपि कैसे पढ़ ली। जब तक आप स्वयं इस पुस्तक को नहीं पढ़ेंगे तब तक 'कहानी का करिश्मा' और मोलेला की मिट्टी का मतलब आपकी समझ में नहीं आयेगा। पुस्तक की पाठकीयता ने कहानी ने गुदगुदाया है। एक स्मित, एक मुस्कराहट चेहरे पर लाइये और मोलेला की मिट्टी को माथे पर लगाइये। शायद आपके ललाट के लेख सुगंधित हो जायें।''

-बालकवि बैरागी द्वारा लिखित पुस्तक की भूमिका से

HIGH-END LUXURY APPARTMENTS

ARCHI Platinum
Proud to be here...

SUKHADIA CIRCLE

ARCHI PARADISE
Luxury Living

100 FT. ROAD, SOBHAGPURA

NEW VIDHYA NAGAR, SECTOR - 3

ARCHI PEACE PARK
feel the peace

OPP. CA BHAWAN, SECTOR 14

ARCHI SOLITAIRE
Apartment with luxury

ARCHI GROUP OF BUILDERS

Ground Floor, Archi Arihant Building, 100 ft. Road towards DPS, Sobhagpura Circle, Udaipur - 313001

Ph.: +91-98290 22203, +91-97848 28555, Email: himanshu@archigroup.in • Web: archigroup.in

हिन्दुस्तान ज़िंक ने दिया 2065 करोड़ का लाभांश कर

उदयपुर। हिन्दुस्तान ज़िंक ने बुधवार को स्वर्ण जयन्ती लाभांश के कर के 2065 करोड़ रुपये मुख्य आयकर आयुक्त श्रीमती नीना कुमार को सौंपा। ज़िंक की ओर से प्रतीक रूप में इस चेक को कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल, मुख्य वित्तीय अधिकारी अमिताभ गुप्ता, निदेशक प्रोजेक्ट्स नवीन सिंघल, हेड कोर्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने श्रीमती नीना कुमार एवं अतिरिक्त आयकर आयुक्त ओ.पी. काठेड को प्रदान किया। स्वर्ण जयन्ती पर देश के इतिहास में किसी भी निजी कंपनी द्वारा अब तक का सर्वाधिक लाभांश भारत सरकार को दिया। मुख्य वित्तीय अधिकारी अमिताभ गुप्ता ने बताया कि हिन्दुस्तान ज़िंक ने शेयरधारकों के लिए कंपनी की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर 30 मार्च 2016 को 1200 प्रतिशत लाभांश की घोषणा की थी जिसके तहत प्रत्येक शेयरधारक को 2 रु. के प्रति इक्विटी शेयर पर 24 रु. मिलना तय हुआ है। लाभांश की कुल राशि, लाभांश कर सहित, लगभग

12,205 करोड़ रु. है। हिन्दुस्तान ज़िंक ने गत वर्ष 2015-16 में कुल लाभांश 2,225 करोड़ रु. में से केन्द्रीय कर के रूप में 542 करोड़ रुपये दिये थे।

श्रीमती नीना कुमार ने कहा कि सरकार द्वारा विकास कार्यों में कर का महत्वपूर्ण योगदान है तथा प्रत्येक व्यक्ति व संस्थान को नियमित समय पर कर अदा करना चाहिए। हिन्दुस्तान ज़िंक द्वारा दिया गया 2065 करोड़ रु. का लाभांश कर वर्ष 2016-17 कर-लक्ष्य को प्राप्त करने में बेहद महत्वपूर्ण है जो कि उदयपुर सर्कल एवं राजस्थान के लिए गौरव की बात है।

सुनील दुग्गल ने कहा कि हिन्दुस्तान ज़िंक को गर्व है कि कंपनी ने

हेड कार्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि हिन्दुस्तान ज़िंक के पास 375.1 मिलियन टन संसाधन एवं भण्डार मौजूद है जिसमें उच्च ग्रेड रिजर्व औसतन 11.5 प्रतिशत जस्ता-सीसा मौजूद है। कंपनी 2003 से लगातार संसाधनों एवं भण्डारों का विकास कर रही है।

वेदांता की नंदघर परियोजना का वाराणसी में शुभारम्भ

उदयपुर। वेदांता लि. ने अपनी नंदघर परियोजना का वाराणसी के निकट प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा सांसद आदर्श ग्राम योजना के तहत चयनित गांव नागेपुर में शुभारंभ किया गया। केन्द्रीय मंत्री मानव संसाधन विकास श्रीमती स्मृति जुबिन ईरानी ने पहले नंदघर को राष्ट्र को समर्पित किया। देश में अपनी तरह की पहली साझेदारी के रूप में महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के साथ मिलकर कंपनी देशभर में 4,000 ऐसे मॉडल आंगनवाड़ी अगले दो साल में आरम्भ करेगी।

श्रीमती स्मृति ईरानी ने कहा कि आंगनवाड़ी में देश का भविष्य पलता है और उसी भविष्य को तकनीक के माध्यम से सँवारने का काम वेदांता नंदघर में किया जाएगा। उन्होंने प्रधानमंत्री के आदर्श ग्राम में देश के पहले नंदघर के उद्घाटन को अनूठी पहल की संज्ञा देते हुए उसका अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि आनेवाले समय में इस प्रकार के 4000 नंदघर निर्मित होंगे।

वेदांता समूह के अध्यक्ष अनिल अग्रवाल के अनुसार नंदघर परियोजना प्रधानमंत्री के उस विजन का प्रतिबिम्ब है जिसमें बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, महिला कौशल विकास के साथ रोजगार सृजन की प्रतिबद्धता पर बल दिया गया है। नंदघर गुणवत्ता की शिक्षा, एक विश्वस्तरीय बुनियादी सुविधाओं में स्वास्थ्य और कौशल प्रशिक्षण प्रदान करके समुदायों के लिए दीर्घकालिक लाभ देने से गरीबी उन्मूलन के लिए बदलाव की दिशा में पहला कदम साबित होगी। नंदघर प्रधानमंत्री के डिजिटल भारत, स्वच्छ भारत और स्किल इंडिया के माध्यम से सामाजिक विकास के राष्ट्रीय विजन के अनुरूप है। नंदघर अनूठी निर्माण प्रौद्योगिकी का उपयोग करेगा।

अव्य अग्रवाल चैंपियन बने

उदयपुर। उदयपुर की प्रथम निजी खेल अकादमी वैकुंठ स्पोर्ट्स अकादमी की मेजबानी में हुई बैडमिंटन, टेबल टेनिस स्क्वैश प्रतियोगिता का समापन हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि

एसओजी के अतिरिक्त जिला पुलिस अधीक्षक महावीरसिंह राणावत, जैकी और लोरा (बेल्जियम) थे।

वैकुंठ स्पोर्ट्स अकादमी के डायरेक्टर दीपक डांगी ने बताया कि प्रतियोगिता में अंडर 10 आयु वर्ग के तहत स्क्वैश में अव्य अग्रवाल ने राघवेन्द्र सैनी को हराकर खिताब जीता। वहीं बैडमिंटन अंडर 10 में आदित्य महता, अंडर 14 में छात्रा मिस्ठी, महीजीत राणावत, स्क्वैश में कार्तिक सुहालका, टेबल टेनिस अंडर 17 में चिराग खत्री, बैडमिंटन में यश झा, छात्रा प्रतिभा चौधरी, स्क्वैश में कार्तिक सुहालका और बैडमिंटन डबल्स में यश झा और इशान मट्ठा ने खिताब जीता। दश गहलोत और हर्ष डांगी को बेस्ट परफोरमेंस का खिताब मिला।

वीआर स्मार्टफोन रेंज की पेशकश

उदयपुर। कार्बन मोबाइल्स ने कार्बन वीआर ग्लासेज की पेशकश की है। यह उत्पाद स्मार्टफोन का शानदार अनुभव प्रदान करेंगे। ये ग्लासेज नये लॉन्च किये गये वीआर स्मार्टफोन रेंज में उपलब्ध होंगे, जिसमें कार्बन क्वाट्रो एल 52 और कार्बन टाइटैनियम मैक सिक्स शामिल हैं। कार्बन वीआर ग्लासेज का निर्माण मजबूत एबीएस प्लास्टिक फाइबर से किया गया है।

कार्बन मोबाइल्स के एक्ज़ीक्यूटिव डायरेक्टर शशिन देवसारे ने कहा कि कार्बन के वीआर ग्लासेज कार्बन क्वाट्रो एल 52 और मैक सिक्स में उपलब्ध हैं। कार्बन क्वाट्रो एल 52 में 4जी एलटीई के साथ सोनी सेंसर 5पी एफएफ/22फिल्टर के साथ 8 एमपी रियर कैमरा, 5 एमपी फ्रंट कैमरा, 1.3 गीगाहर्ट्ज क्वाड कोर प्रोसेसर, 2जीबी रैम, 16 जीबी रोम है जिसे माइक्रो एसडी कार्ड के माध्यम से 32 जीबी तक एक्सपैंडेबल किया जा सकता है। इसकी कीमत 8,490 रूपये है। कार्बन मैक सिक्स में बड़ी स्क्रीन के साथ 2जीबी रैम, 16 जीबी रोम, 1.3 गीगाहर्ट्ज क्वाड कोर प्रोसेसर, 3300 एमएएच की बैटरी, वीआर लोडेड गेम्स और क्यूरेटेड गेम्स है। इसकी कीमत 7490 रूपये है।

ज़िंक ने दिया भारत सरकार को 5059 करोड़ का लाभांश

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक ने भारत सरकार को लाभांश के तौर पर 5059 करोड़ रूपये दिये हैं। जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुगल ने नई दिल्ली में केन्द्रीय वित्त मंत्री अरूण जेटली को 2,995 करोड़ रूपये का चैक दिया।

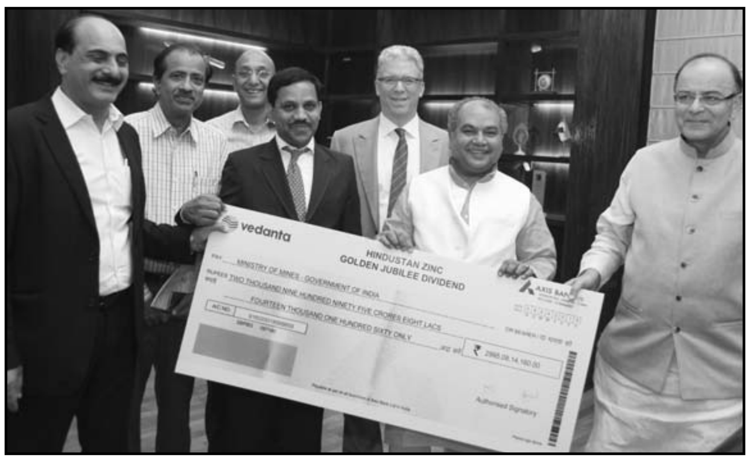

इस अवसर पर केन्द्रीय खान मंत्री नरेन्द्रसिंह तोमर, खान सचिव-बलविन्दर कुमार, वेदान्ता समूह के मुख्य कार्यकारी अधिकारी टॉम अल्बनीज़, वेदान्ता समूह के निदेशक (वित्त) तरूण जैन, हिन्दुस्तान जिंक्र के मुख्य वित्तीय अधिकारी अमिताभ गुप्ता भी उपस्थित थे। इसके साथ ही जिंक प्रबंधन द्वारा जल्दी ही 2064.4 करोड़ रूपयों का चेक केन्द्रीय कर विभाग को सौंपा जाएगा। उल्लेखनीय है कि गत 30 मार्च को निदेशक मण्डल की बैठक में हिन्दुस्तान जिंक्र के शेयरधारकों के लिए कंपनी की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर 1200 प्रतिशत लाभांश की घोषणा की गई थी जिसके तहत प्रत्येक शेयरधारक को 2 रुपये के शेयर पर 24 रुपये मिलना तय हुआ है। इस घोषणा के अनुसार जिंक लाभांश व लाभांश वितरण कर को मिलाकर 12,205 करोड़ रुपये वितरित करेगा। यह भारत के इतिहास में किसी भी निजी कंपनी द्वारा भारत सरकार को अब तक का दिया गया सर्वाधिक लाभांश है। हेड-कार्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि हिन्दुस्तान जिंक्र ने इसी वर्ष प्रति शेयर 3.80 पैसे का लाभांश घोषित कर 1,932 करोड़ रूपये का लाभांश (कर सहित) वितरित किया है।

एमएफ स्मार्ट ट्रैक्टरों को उतारेगा

उदयपुर। विश्व का तीसरा सबसे बड़ा ट्रैक्टर निर्माता, टैफे- ट्रैक्टर एंड फार्म इक्विपमेंट लि. अपने सबसे नवीनतम मैसी फर्ग्यूसन (एमएफ) स्मार्ट ट्रैक्टरों की श्रृंखला का अनावरण करेगा।

ग्राहकों की बढ़ती जरूरतों को देखते हुए, 30-60 एचपी सेगमेंट में बहुविज्ञता और उच्च उत्पादकता वाले इन ट्रैक्टरों की श्रृंखला में बेहतर और अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग किया गया है और इसमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर की शैली और एर्गोनोमिक विशेषता भी है- जो सही मायने में विश्वस्तरीय है।

टैफे की नयी स्मार्ट श्रृंखला किसानों की इनपुट के अनुसार तैयार की गयी है और ट्रांसमिशन विकल्पों की नयी रेंज में उपलब्ध हैं जो किसी भी अनुप्रयोग या इस्तेमाल में चालक के आराम के साथ-साथ अधिक उत्पादकता का वायदा करती है। इस श्रेणी की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं में टैफे का चिह्नक ट्रांसमिशन, 12 स्पीड रोटोटरक टीएम, 16 स्पीड सुपरशटलटीएम और 16 स्पीड कॉमफिमेशटीएम शामिल हैं। यह ट्रैक्टर बेहतर एचइवीटीएम ड्यूल क्लच से लैस होते हैं जो अत्यंत भारी अनुप्रयोगों जैसे की लोडर, डोजर, और ढुलाई और कटाई के लिए उपयुक्त है।

अनुकूल ट्रांसमिशन के साथ नया एफसीटी इंजन, ज्यादा किफ़ायत के साथ मैसी फर्ग्यूसन की उच्च प्रदर्शन की विरासत को आगे ले जाता है। मैसी फर्ग्यूसन ब्रैंड ग्लोबल स्तर पर अपने हाइड्रोलिक्स के लिए जाना जाता है, और इस स्मार्ट श्रृंखला को भारी भार जल्दी उठाने के लिए अपनी अद्वितीय कॉम्बीबूस्ट प्रणाली द्वारा बेमिसाल हाइड्रोलिक क्षमता प्रदान करने के लिए उन्नत किया गया है।

केवलरामानी को देवपुरा साहित्य सम्मान

साहित्य मण्डल, श्रीनाथद्वारा द्वारा डॉ. विनोदकुमार केवलरामानी को भगवती प्रसाद देवपुरा साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया। गत बीस वर्षों से हिन्दी भाषा एवं साहित्य की श्रीवृद्धि में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने वाले केवलरामानी ने स्वतंत्रता संग्रामकालीन राजस्थान के समाचार पत्रों में प्रशासन की छवि विषय पर पीएच.डी. की उपाधि अर्जित की। उन्होंने लगभग पचास परियोजनाओं में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। एक अनुवादक के रूप में भी उनकी विशिष्ट पहचान है। सम्मान स्वरूप उन्हें 3100 रूपये नकद, प्रशस्ति पत्र, शॉल एवं श्रीनाथजी की छवि प्रदान की गई।

-डॉ. मनोहर प्रभाकर

आज का संदेश

ईमानदारी से जो भी अर्जित करो
उसका कुछ हिस्सा सेवा में जरूर
समर्पित करो। और हाँ! इतना
'अर्जन' भी मत करो कि 'अर्जन-
अर्जन' में ही 'विसर्जन'
हो जाएं।

-मुनि [illegible]

शब्द रंजन के सहयोगार्थ

वार्षिक व्यक्तिगत	250/
वाषिक संस्थागत	500/
संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
साहित्यिक चौपाल	500/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
आजीवन सदस्य	3000/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

राजस्थान में जैन...

(पृष्ठ एक का शेष)

'धर्म मनुष्य और भूगोल की पारस्परिकता से उत्पन्न विरासत एवं भौगोलिक आयाम' विषय पर गंभीर चिंतन है। धर्म और भौगोलिकता को जोड़ने वाली कड़ी मनुष्य है। मनुष्य के विचारों में धर्म की पैठ जितनी गहरी होगी उतना ही वह विवेकपूर्ण होगा और विरासत के अनुकूल कार्यप्रणाली अपनावेगा। धर्म के अभाव में वह प्रतिकूल कार्यप्रणाली, विध्वंस, विनाश आदि को अपनाकर विरासत को भग्नावशेषों में परिवर्तित कर देगा। विरासत धर्म, मनुष्य और भौगोलिकता के त्रिआयामी परिवेश से निष्पन्न एक संश्लिष्ट प्रक्रिया की मूर्त-अमूर्त अभिव्यक्ति है। अमूर्त रूप से यह विरासत धर्म-दर्शन-संस्कृति एवं मनुष्यों में व्याप्त होती है और मूर्त रूप में तीर्थ, मंदिर, मूर्तियों, भवनों, स्मारकों, साहित्य, कला, स्थापत्य आदि के प्रतिमानों में दृष्ट होती है। मनुष्य अपने दृष्टिकोण के आधार पर सकारात्मक व नकारात्मक मनोवृत्तियों से प्रेरित होकर कार्य करता है। सकारात्मकता के अनुकूल परिणाम जैनधर्म की सांस्कृतिक विरासत में अहिंसा, शाकाहार, चातुर्मास, पर्युषण एवं दशलक्षण पर्व, छना पानी पीना, रात्रिभोजन निषेध, महाव्रत व अणुव्रत, जैनाचार, कर्मादान, समता, अपरिग्रह, तीर्थंकरों के धर्मचिह्न आदि में मूल्यों के रूप में दृष्ट है।

इस सकारात्मकता के भौगोलिक आयाम संरक्षणात्मक, सुरक्षात्मक, समाधानात्मक, स्वतंत्रतात्मक, समतामूलक, संतुलनात्मक, समन्वयात्मक, परस्परोपकारी, विकासोन्मुख, सम्यक्त्वी एवं संयम साधनात्मक सदाचारी हैं जो पर्यावरण आदि के लिये हितकारी और विरासत के लिये उन्नयनकारी हैं। मनुष्य की नकारात्मकता के परिणाम समस्याओं के रूप में भौगोलिकता एवं विरासत दोनों में पारिस्थितिकी संकट, प्रदूषण, आपदाओं, वन विनाश व अन्य विविध संकटों के रूप में दिखते हैं। नकारात्मकता के भौगोलिक आयाम समस्यात्मक, शोषणात्मक, असंतुलनकारक, त्रुटिपूर्ण विकास वाले, मिथ्यात्वी, संवेदनशून्य, भोगवादी, विध्वंसात्मक, असुरक्षात्मक, आस्थाहीनता व विपर्यययुक्त वैचारिक तथा सांस्कृतिक प्रदूषण युक्त, अनियंत्रण के आयाम हैं।

जैन मत के अनुसार तीर्थ भवसागर से पार करने में समर्थ साधन हैं। दिगंबर मत में तीर्थ के साथ 'अतिशय ' शब्द भी जोड़ दिया गया है। राजस्थान के जैन तीर्थों की विरासत प्रभावना की दृष्टि से ही नहीं अपितु जैन मंदिर निर्माण कला, मूर्तिकला, स्थापत्य, विविध जिनायतनों, शिलालेखों, मूर्तिलेखों, विभिन्न स्मारकों, साहित्य व शिक्षा केंद्रों एवं शास्त्र भंडारों के लिये भी उल्लेखनीय है। तीर्थ व मंदिर आध्यात्मिक चेतना का केंद्र होते हैं तथा धार्मिक व सामाजिक प्रवृत्तियों के संवाहक भी।

तीर्थों के प्रसरण के भौगोलिक आयाम भी आकर्षक हैं। दिगंबर अतिशय क्षेत्र पूर्वी मैदानी व पठारी प्रदेश में हैं। श्वेतांबर तीर्थों का संकेद्रण सिरोही जिले में सर्वाधिक है। अरावली पर्वत की क्रोड में ही पाली, जालौर, राजसमंद और मेवाड़ क्षेत्र में तीर्थों की अच्छी संख्या है। अर्बुदमंडल से दूर जाते जाने पर तीर्थों का प्रसरण विरल होता जाता है। प्राचीनकाल से आज तक श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चुरू, सीकर, दौसा, भरतपुर, धौलपुर, कोटा तथा बारां अधिकांश महत्वपूर्ण तीर्थ पर्वतीय सुरक्षागाहों में हैं, जो राजस्थान में मां की गोद की तरह सुरक्षित हैं। अर्बुदमंडल, सिरोही, पाली, जालौर, उदयपुर, डूँगरपुर जिले इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं। तीर्थ निर्माण हेतु आंचलिक संसाधनों का प्रयोग ही अधिक हुआ है। स्थानीय भौगोलिकता में ही रंग-बिरंगे प्रस्तर, संगमरमर, ग्रेनाइट आदि उपलब्ध रहे हैं। चित्रकला के अंतर्गत भित्ति चित्र एवं जैन लघुचित्र शैली, मूर्तिकला के अंतर्गत प्रस्तर एवं धातु मूर्तिकला, स्थापत्य कला के अंतर्गत मंदिर निर्माण शैली व नियोजन तथा रूपप्रद कला के अंतर्गत सज्जांकन, तक्षित प्रतिमाऐं एवं वर्णनात्मक चित्रण सम्मिलित है। जैनकला के ये विविध स्वरूप प्राचीन व अर्वाचीन तीर्थ, मंदिरों एवं शास्त्र भंडारों में संग्रहीत ग्रंथ आदि में देखने को मिलते हैं।

जैन संस्कृति ने लोकसंस्कृति को निरंतर संरक्षण दिया है। राजस्थान के लगभग 200 छोटे बड़े शास्त्र भंडार जैन विरासत के बहुमूल्य उपहार हैं जो प्राचीन तथा समकालीन इतिहास के तथ्यों के अकूत खजाने हैं। इनमें लगभग तीन लाख ग्रंथ संग्रहीत हैं जो नवीन शोध हेतु बहुविध आयाम उपस्थित करते हैं। इन शास्त्र भंडारों के कारण थार के मरूस्थल को आध्यात्मिक पहचान मिली है। संपूर्ण भारत के लगभग सारे दुर्लभ जैन अपभ्रंश ग्रंथ अजमेर, नागौर व जयपुर में संग्रहीत हैं। इन ज्ञान भंडारों की स्थापना में जैन समाज, व्यापारियों एवं श्रेष्ठियों तथा सर्वोपरि जैनाचार्यों का अत्यधिक योगदान रहा है।

राजस्थान के छह अतिमहत्वपूर्ण ज्ञान भंडारों में मरू के जैसलमेर, बीकानेर, नागौर तथा मेरू के उदयपुर, जयपुर, अजमेर हैं। वस्तुत: ये ही जैन विरासत के हृदय प्रदेश हैं। राजस्थान के प्रमुख भूमिगत शास्त्र भंडार नागौर, अजमेर, आमेर, दौसा, बसवा, बयाना, कामा व भरतपुर में हैं। अभिलेखीय प्रमाणों के आधार पर राजस्थान के प्रमुख साहित्य केंद्र जैसलमेर, डूँगरपुर, नागौर, फतेहपुर (शेखावाटी), अजमेर, आमेर, रणथंभौर, बारां, कोटा, चित्तौड़ हैं।

राजस्थान में जैन विरासत पर्यटन प्राचीन समय में चार पंचतीर्थियों के माध्यम से संपन्न किया जाता रहा है। आबू के देलवाड़ा मंदिर व रणकपुर मंदिर तो पहले से ही कलातीर्थ के रूप में ख्यातिप्राप्त हैं। पर्यटन विभाग जैसलमेर-जोधपुर-बीकानेर को भी 'मरू त्रिकोण' के रूप में महत्व प्रदान कर रखा है। जयपुर पहले से ही केंद्रीय पर्यटन के 'स्वर्णिम त्रिभुज' में सम्मिलित है। विरासत के समेकित स्वरूप को दृष्टि में रखकर छह जैन विरासत पर्यटन परिमंडल सुझाये गये हैं। इनमें पहला मरू जैन विरासत पर्यटन परिमंडल जिसमें जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, बीकानेर व नागौर जिले हैं। दूसरा अर्बुदमंडल जैन विरासत पर्यटन परिमंडल जिसमें जालौर, सिरोही व पाली जिले हैं। तीसरा मेवाड़-वागड़ जैन विरासत पर्यटन परिमंडल जिसमें उदयपुर, चित्तौड़, भीलवाड़ा, राजसमंद, डूँगरपुर, बांसवाड़ा व प्रतापगढ़ जिले हैं। चौथा हाड़ौती जैन विरासत पर्यटन परिमंडल जिसमें कोटा, बूंदी, झालावाड़ व बारां जिले हैं। पांचवां मैदानी जैन विरासत पर्यटन परिमंडल जिसमें अजमेर, टोंक, सवाईमाधोपुर, जयपुर, अलवर, सीकर, करौली व दौसा जिले तथा छठा विरासत पर्यटन परिमंडल जिसमें श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चुरू, झूंझनू, भरतपुर, धौलपुर जिले सम्मिलित हैं।

कान्यो मान्यो

ट्रस्ट की जगह भ्रस्ट छपना

'अरे गजब हो गया। अनर्थ हो गया।' कान्यो के स्वर में फटा बांस था। आक्रोश भी बिल्ली के फूटे हंडे से कम नहीं था। झाड़ू से बिखरे तिनकों सा फटफटाता हुआ रोवण्या स्वर सुन मान्यो ने उसके कंधे पर हाथ रख धीरज से पूछा- 'क्या गजब हो गया और क्या अनर्थ हो गया लाला? इस देश में हर समय ही, हर कहीं गजब और अनर्थ होता रहता है। तू तो ऐसे घबराया हुआ है जैसे रस्ते चलते ही तेरी घरवाली के प्रसव हो गया है। आखिर हुआ क्या यह तो बता!' तसल्ली खाते कान्यो बोला- 'अरे एक जन कल्याण ट्रस्ट में ट्रस्ट की जगह भ्रस्ट छप गया।'

'तो इसमें इतना हायतोबा क्या। कुकुरमुत्ता की तरह ट्रस्ट बन रहे हैं और खरपतवार जैसे उनके कार्य संपादित हो रहे हैं और फिर चारों ओर भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार की हवा है। पांचों तत्वों से जुड़े जितने भी कार्य हैं उन सबमें भ्रष्टाचार नमक मिर्च हींग सी वासना दे रहा है, सो ट्रस्ट की जगह भ्रस्ट छपने में क्यों मारामारी है।'

कान्यो को थोड़ा संतोष भाव आया। उसने सुन रखा था- 'जब आवे संतोष धन, सब धन धूलि समान' सो उसकी स्वांस में स्वांस आई। मान्यो ने उसे ठंडे पानी की बोतल पकड़ाई और अपने अनुभव की फेहरिस्त सुनाई।

अरे भाई, ट्रस्टों से पूरे घर का लालन पालन हो रहा है। जन कल्याण ट्रस्ट तो नामधारी मात्र हैं। वे स्वकल्याण के ही सबब अधिक बने हुए हैं। हमारे एक समधीजी ने तो पूरा मायरा ही ट्रस्ट से कर दिया। एक अन्य सगेजी तो ट्रस्ट के पैसों से ही अपना पाजामा, कुरता और पूरे घरवालों की आवश्यकताओं को टीप-टॉप रखते आ रहे हैं। एक अन्य दोस्त ने अपने पेंट कोट ही नहीं बनवाये, घर के जापे का सारा खर्च और पोतड़े तक ट्रस्ट की कृपा से बनवा लिए।

कान्यो से रहा नहीं गया। बोला- 'सबकुछ सुन अब रोने की बजाय हंसी ही आ रही है। मसखरी माफ करना। एक दिन एक नामी सेठजी अपने संजीदा बालकों पर बरस रहे थे। बिचारे बच्चे कह रहे थे कि ट्रस्ट का पैसा सार्वजनिक उपयोग के लिए ही होता है।'

सेठजी को यह सुनना बर्दास्त नहीं हुआ। अपनी मूंछ की एक तरफा मरोड़ देते बोले- 'अरे बेवकूफों, तुम्हें कैसे समझाऊं। ट्रस्ट अपना। उसमें डाली रकम अपनी सो अपने लिए उसका पैसा क्यों नहीं खर्च हो। पैसा बड़ी मुश्किल से आता है। कमायें हम और मौज मजे गुलछर्रे कोई और उड़ायें, यह मुझसे बर्दास्त नहीं।'

मान्यो ने अपनी हथेली उसके गाल पर घुमाई और बोला- 'न्याय और भाटा ज्यों बिठाओ, बैठ जाय। बहस फालतू है। जगह-जगह आगेवाण वे ही बने हुए हैं जिनके पास पैसा है। भामाशाह का सम्मान भी उन्हीं को मिल रहा है। समाजसेवी भी वे ही बने हुए हैं। जिनके पास पैसा नहीं, उसे कोई भूंगड़े के भाव भी क्यों पूछेगा। जिसकी लाठी उसकी भैंस होती है। लाठी को गाली देने की बजाय भैंस में ही यह अक्ल घुस जाती कि वह लाठी वाले के साथ नहीं जाये।'

कान्यो ने तुरफ मारी, उसे याद आगई वे लाइनें जो गिरधर की कुंडलियों में पढ़ी थी- 'सब हथियारन छोड़ हाथ में लीजे लाठी।' सो तुम्हारी समझ, तुम्हारा अनुभव और तुम्हारी सीख मुझे भी शिरोधार्य है।

लैक्मे सन एक्सपर्ट देगा धूप से होने वाले नुकसान से छुटकारा

उदयपुर। लैक्म ने गर्मियो के लिये लैक्मे सन एक्सपर्ट की पेशकश की है जो धूप से होने वाले नुकसान से छुटकारा दिलायेगा। सूरज की हानिकारक यूवीबी किरणों से 97 फीसदी सुरक्षा करने वाले लैक्मे सन एक्सपर्ट में एसपीएफ30 है और इसे विशेषतौर पर विकसित और डर्मेटोलॉजिकली टेस्ट किया गया है।

यह सभी प्रकार की त्वचा के लिए उपयुक्त है। अब असप टैन होने की चिंता और डर को दूर कर अपने स्कार्फ और पूरी बांह वाली ड्रेस की जगह कैमिसोल्स, स्कर्ट और शॉर्ट्स पहन सकती हैं। लैक्मेसन एक्सपर्ट एसपीएफ 30 सुनिश्चित करता है कि आप सूरज की किरणों से होने वाले नुकसान से पूरी तरह बचें और जीभर कर धूप में वह सबकर सकें जो करने का आपका मन है। आपकी त्वचा को धूप में यूवीबी किरणों से सुरक्षित रखने वाला लैक्मेसन एक्सपर्ट तीन एसपीएफ मात्राओं में आता है; एसपीएफ 24, एसपीएफ 30 और एसपीएफ50। यह देशभर के स्टोरों में बिक्री के लिए उपलब्ध है।

उबर ने कीमतें घटाई

उदयपुर। एक स्मार्टफोन ऐप के जरिये यात्रियों को एक बटन दबाकर ड्राइवरों से संपर्क बनाने की सुविधा देने वाली कंपनी उबर ने भारत के दस शहरों में उबर-गो की कीमतों में कटौती की है। इस कटौती का उद्देश्य उबर को यात्रियों के लिए एक सर्वाधिक किफायती यात्रा विकल्प बनाना और लाखों छोटे व्यवसायियों को अपने प्लेटफॉर्म के माध्यम से आमदनी के अवसर प्रदान करना है। इंदौर और नागपुर में 9 प्रतिशत से लेकर जोधपुर तथा उदयपुर जैसे शहरों में 22 प्रतिशत तक कीमतों में कटौती के साथ उबर की यात्रा अब अधिक किफायती बन जाएगी।

सब टीवी पर नया शो डॉ. भानुमति ऑन ड्यूटी

उदयपुर। सब टीवी पर नया शो डॉ. भानुमति ऑन ड्यूटी का प्रसारण किया जाएगा। इसमें कविता कौशिक भानुमति भीन ऊर्फ 'भाभी' की भूमिका में दिखाई देंगी। वह राजस्थान के राजा की कुंवरी है और एक कट्टर आर्मी डॉक्टर है। शो में कविता हर दिन असामान्य एवं हास्यप्रद मेडिकल केस का समाधान करेगी।

PIMS

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल सांइसेज

माननीया श्रीमती वसुन्धरा राजे

(मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार)

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना

का हार्दिक आभार

राजस्थान की जनता को समर्पित वरदान स्वरूप

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना

उपचार हेतु अधिकृत

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेज (PIMS), उमरडा उदयपुर

300 बेडेड मल्टीस्पेशीयलीटी अस्पताल जहां उच्च स्तरीय तकनीक तथा अनुभवी चिकित्सको एवं स्टाफ द्वारा ईलाज

PIMS में उपलब्ध उच्च स्तरीय नि:शुल्क सुविधाएँ

24x7 आपातकालीन सुविधा उपलब्ध ❍ Dialysis सुविधा
ब्लड बैंक सुविधा ❍ फार्मेसी (24x7) ❍ एम्बुलेन्स सुविधा
सेन्ट्रल लेब ❍ मोडयूलर ऑपरेशन थियेटर ❍ डिजीटल X-Eay
अल्ट्रासाउण्ड सोनोग्राफी (4D) तथा फिजीयोथेरिपी विभाग

PIMS में उपलब्ध उच्च स्तरीय चिकित्सा सुविधाएँ

मेडीसीन विभाग ❍ सर्जरी विभाग ❍ ऑर्थोपेडीक विभाग
स्त्री एवं प्रसुति रोग ❍ दंत रोग विभाग ❍ चर्म रोग विभाग
टि.बी. एवं चेस्ट विभाग ❍ मनोचिकित्सा विभाग
बाल रोग विभाग

PIMS पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल सांइसेज

(मेडिकल काउन्सिल ऑफ इण्डिया के द्वारा मान्यता प्राप्त)

अम्बुआ रोड़, ग्राम उमरडा, तह. गिर्वा, उदयपुर-313015 (राज.), फोनः 9352054115, 9352011351, 9352011352

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित।
सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।